Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) ______________________

   (Name) ______________________

2. (Signature) ______________________

   (Name) ______________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No. ______________________

(In words)

Test Booklet No.

J—0309

PAPER—III

Time : 2½ hours] **PHILOSOPHY** **[Maximum Marks : 200**

Number of Pages in this Booklet : **40** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले ले। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।**

PHILOSOPHY

दर्शनशास्त्र

PAPER – III

प्रश्न-पत्र – III

NOTE: **This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.**

नोट : **यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड है। अभ्यर्थियों को इन में समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।**

SECTION - I

खण्ड – I

Note : This section contains five (5) questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about thirty (30) words and each carries five (5) marks.

(5x5=25 marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित पाँच (5) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

(5x5=25 अंक)

Supermind has quite another, a positive and direct and living experience of the supreme Infinite. The Absolute is beyond personality and beyond impersonality, and yet it is both the Impersonal and the Supreme Person and all persons. The absolute is beyond the distinction of unity and multiplicity, and yet it is the One and the innumerable Many in all the universes. It is beyond all limitation by quality and yet it is not limited by a qualityless void but is too all infinite qualities. It is the individual soul and all souls and more of them; it is the formless Brahman and the universe. It is the cosmic and the supracosmic spirit, the supreme Lord, the supreme Self, the supreme Purusha and supreme Shakti, the Ever Unborn who is endlessly born, the Infinite who is innumerably finite, the multitudinous One, the complex Simple, the many–sided Single, the Word of the Silence Ineffable, the impersonal omnipresent Person, the Mystery, translucent in highest consciousness to its own spirit, but to a lesser consciousness veiled in its own exceeding light and impenetrable for ever. These things are to the dimensional mind irreconcilable opposites, but to the constant vision and experience of the supramental Truth–Consciousness they are so simply and inevitably the intrinsic nature of each other that even to think of them as contraries is an unimaginable violence. The walls constructed by the measuring and separating Intellect have disappeared and the Truth in its simplicity and beauty appears and reduces all to terms of its harmony and unity and light.

अतिमन को परम अनन्त का एक सर्वथा भिन्न भावात्मक एवं साक्षात जीवन्त अनुभव होता है। परमतत्त्व व्यक्तित्व एवं अव्यक्तित्व से परे होता है तथापि वह अव्यक्तिगत और परम पुरूष तथा समस्त पुरूष एक साथ होता है। परमतत्त्व एकत्व एवं बहुत्व के भेद से परे है, तथापि वह समस्त विश्वों में एक एवं असंख्य बहुत्व है। यह गुण की समस्त सीमाओं से परे है तथापि यह गुणरहित रिक्ति से सिमित नहीं है एवं वह समस्त अनन्त गुण भी है। यह व्यक्तिगत आत्मा है और समस्त आत्मायें है और उनका अतिक्रमण भी करता है; यह निराकार ब्रह्म और विश्व है। यह वैश्विक और अतिवैश्विक चेतना, परम प्रभु, परमआत्मा, परमपुरूष तथा परमशक्ति है। वह ऐसा सनातन अजन्मा है जो अन्तरहित ढंग से जन्म लेता है। वह मिश्रित सरल, बहुपक्षीय एकाकी, अनिर्वचनीय शांति का शब्द, अव्यक्तिक सर्वव्यापक पुरूष, रहस्य है। यह अपनी परम चेतना में स्वयमेव परभासी है किन्तु न्यूतर चेतना के लिए उसका अत्यधिक प्रकाश का आवरण सदा के लिए अभेद्य है। सीमित मन के लिये यह बातें असंधेय विरोधी हैं, तथापि अतिमानसिरक ऋत्-चित् की सतत दृष्टि एवं अनुभव में वे उनकी अतिसरल एवं अपरिहार्य आन्तरिक प्रकृति हैं। इनको विरोधी के रूप में समझना अकल्पनीय हिंसा है। मापन एवं पृथक्कारी बुद्धि द्वारा निर्मित दिवालें गिर जाती हैं और सत्य अपने सहज एवं सुन्दर रूप में प्रकट हो जाता है और सबका पर्यवसान उसके सामंजस्य, एकता और प्रकाश में हो जाता है। आयाम और भेद अलंकारिक प्रयोग के लिए बच जाते हैं।

1. For a limited mind which are the irreconcilable opposites ?
सीमित मन के लिये असंधेय विरोधी कौन हैं ?

2. What is unimaginable violence ?

अकल्पनीय हिंसा क्या है ?

3. Enumerate the qualities of The Absolute.

परमत्त्व के गुणों का परिगणन कीजिये।

4. When are the opposites reconciled ?

विरोधों का समन्वय कब होता है ?

5. What is the nature of the Supramental Truth Consciousness ?

परम ऋत-चित् का स्वरूप क्या है ?

SECTION - II

खण्ड – II

Note : This section contains fifteen (15) questions, each to be answered in about thirty (30) words. Each question carries five (5) marks.

(5x15=75 marks)

नोट : इस खंड में पाँच-पाँच (5 - 5) अंकों के पंद्रह (15) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है।

(5x15=75 अंक)

6. Which dravyas are nitya according to the Vaiśeṣika system ? State, in brief, the reason for admitting ākāśa.

वैशेषिक के अनुसार कौन से द्रव्य नित्य हैं ? आकाश की सत्ता स्वीकार करने हेतु दी गई युक्ति को संक्षेप में प्रस्तुत कीजिये।

7. What is s′abdagraha ? Explain Vyākaraṇa as a means of s′abdagraha.

शब्दग्रह क्या है? शब्द ग्रह के साधन के रूप में व्याकरण की व्याख्या कीजिये।

8. Define pratyakṣa pramāṇa as per Diṅnāga and Dharmakīrti. Is there any distinction between the two definitions ? Explain.

दिङ्नाग और धर्मकीर्ति के अनुसार प्रत्यक्ष प्रमाण की परिभाषा दीजिये। क्या दोनों परिभाषाओं में कोई भेद है। व्याख्या कीजिये।

9. What is vyāpti ? Why is vyāpti necessary for anumiti ?

व्याप्ति क्या है? अनुमिति के लिए व्याप्ति क्यों आवश्यक है?

10. State the vedic notion of Ṛta.

ऋत् की वैदिक अवधारणा का प्रतिपादन कीजिये।

11. When does a karma become niṣkāma ? Explain, the notion of lokasanigraha.

कर्म. कब निष्काम होता है ? लोकसंग्रह की धारणा की व्याख्या कीजिये ?

12. Explain brahmacarya in the light of Ās′ramadharma.

आश्रम धर्म के आलोक में ब्रह्मचर्य की व्याख्या कीजिये।

13. Discuss svataḥprāmānyavāda and parataḥpramāṇyavāda.

स्वत: प्रमाण्यवाद एवं परत:प्रमाण्यवाद का विवेचन कीजिये।

14. Are space and time subjective or objective ? Discuss.

क्या दिक् और काल आत्मनिष्ठ है अथवा वस्तुनिष्ठ ? विवेचन कीजिये।

15. Distinguish between <u>Reality</u> and <u>appearance</u>.

सत् एवं आभास में भेद कीजिये।

16. Explain the different issues relating to mind and body in Western Philosophy.

पाश्चात्य दर्शन से सम्बद्ध मन-देह से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं की व्याख्या कीजिये।

17. "Freedom and responsibility go hand in hand". Discuss.

'स्वतंत्रता एवं उत्तरदायित्व युगपद हैं।' विवेचन कीजिये।

18. Explain the ethical concepts of <u>Good</u>, <u>right</u> and <u>value</u>.

शुभ, उचित एवं मूल्य की नैतिक अवधारणाओं की व्याख्या कीजिये।

19. Distinguish between Argument and Argument-form.

तर्क एवं तर्क-रूप में भेद कीजिये।

20. State the square of opposition.

विरोधवर्ग का निरूपण कीजिये।

SECTION - III

खण्ड – III

Note : This section contains five (5) questions from each of the electives / specialisations. The candidate has to choose only one elective / specialisation and answer all the five questions from it. Each question carries twelve (12) marks and is to be answered in about two hundred (200) words.

(12x5=60 marks)

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से पाँच (5) प्रश्न हैं। अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से पाँचों प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रत्येक प्रश्न बारह (12) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग दो सौ (200) शब्दों में अपेक्षित है।

(12x5=60 अंक)

Elective - I

विकल्प – I

21. Is comparative study of religions possible ? Discuss.

क्या धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन संभव है ? विवेचन कीजिए।

22. "Religion and secular society are contradictions in terms". Discuss.

धर्म एवं धर्म निरपेक्ष समाज व्याघाती हैं ? विवेचन कीजिए।

23. Discuss the significance of inter-religious dialogue in the contemporary world.

आधुनिक जगत में आन्तर-धार्मिक संवाद के महत्त्व का विवेचन कीजिए।

24. "The problem of evil in all great religions, is a bitter pill which no theist can easily swallow". Discuss.

''सभी महान धर्मों में अशुभ की समस्या एक कड़वी गोली है जिसे कोई भी ईश्वरवादी आसानी से निगल नहीं सकता है।'' विवेचन कीजिए।

25. Discuss the concept of liberation in the light of Hinduism and Christanity.

हिन्दू धर्म एवं इसाई धर्म के आलोक में मुक्ति की अवधारणा का विवेचन कीजिए।

OR / अथवा

Elective - II

विकल्प – II

21. Discuss Strawson's criticism of Russell's theory of description.

रसेल के वर्णन के सिद्धान्त की स्ट्रासन कृत आलोचना का विवेचन कीजिये।

22. Bring out the distinction between 'saying' and 'showing'.

'कथन एवं प्रदर्शन' के मध्य भेद का विवेचन कीजिये।

23. Explain why Frege thinks that grasping a sense is not a matter of having an idea or a mental image.

अर्थ का ग्रहण, प्रत्यय अथवा मानसिक बिम्ब को ग्रहण करने की बात नहीं है- फ्रेगे के इस कथन की व्याख्या कीजिये।

24. Explain the distinction between atomic and holistic theory of meaning.

अर्थ के आणविक एवं समग्रतापरक सिद्धान्त के मध्य भेद की व्याख्या कीजिये।

25. Explain Austin's notion of performative utterances.

आस्टिन के सम्पादनात्मक कथनों की धारणा की व्याख्या कीजिये।

OR / अथवा

Elective - III

विकल्प – III

21. Explain the functions of intentional consciousness.

प्रयोजनयुक्त चेतना के कार्यों की व्याख्या कीजिये।

22. Bring out the difference between Husserl's and Heidegger's understanding of phenomenology.

हुसरल और हाइडेगर की फिनामेनालोजी की अवधारणा में भेद को स्पष्ट कीजिये।

23. How does phenomenology help us in understanding the human condition ? Explain.

मानवीय स्थिति को समझने में फिनामेनालाजी किस प्रकार हमारी सहायता करती है। व्याख्या कीजिये।

24. Explain Gadamer's 'reader response theory'.

गादेमर की 'पाठक प्रतिक्रिया सिद्धान्त' की व्याख्या कीजिये।

25. Discuss the concept of the life-world (Lebenswelt).

'लाईफ-वर्ल्ड' की अवधारणा का विवेचन कीजिये।

OR / अथवा

Elective - IV

विकल्प – IV

21. Discuss Śaṅkara's concept of Nirguṇa Brahman.

शंकर के निगुर्ण ब्रह्म की अवधारणा का विवेचन कीजिये।

22. Bringout the means of liberation, according to Rāmanuja.

रामानुज के अनुसार मोक्ष के साधनों का विवेचन कीजिये।

23. Discuss the concepts of Anupramāṇa and Kevalpramāṇa in Madhva Vedenta

मध्यवेदान्त में अनुप्रमाण एवं केवलप्रमाण की अवधारणा का विवेचन कीजिये।

24. Explain whether the concept of bhedābheda is logically justifiable according to Nimbārka.

क्या निम्बार्क के अनुसार भेदाभेद की अवधारणा तर्कत: औचित्यपूर्ण है। व्याख्या कीजिये।

25. Discuss the role of puṣṭi - mārga as means of liberation, according to Vallabha.

वल्लभ के अनुसार मुक्ति के साधन के रूप में पुष्टिमार्ग की भूमिका का विवेचन कीजिये।

OR / अथवा

Elective - V

विकल्प – V

21. Discuss Gandhi's critique of modernity.

गाँधी की आधुनिकता की आलोचना का विवेचन कीजिए।

22. Examine Gandhi's conception of culture.

गाँधी की संस्कृति की अवधारणा का मूल्यांकन कीजिए।

23. What according to Gandhi should be the ideal status of woman in Indian Society ? Discuss.

भारतीय समाज में गाँधी के अनुसार महिलाओं की आदर्श स्थिति क्या होनी चाहिए ? विवेचन कीजिए।

24. What according to Gandhi is the ideal relationship between truth and God ? Explain.

गाँधी जी के अनुसार सत्य और ईश्वर में आदर्श संबंध क्या है ? व्याख्या कीजिए।

25. Bring out the relationship between sarvodaya and swaraja.

सर्वोदय और स्वराज में संबंध की व्याख्या कीजिए।

SECTION - IV

खण्ड – IV

Note : This section consists of one essay type question of forty (40) marks to be answered in about one thousand (1000) words on any one of the following topics.

(40x1=40 marks)

नोट : इस खंड में एक चालीस (40) अंकों का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से केवल एक पर, लगभग एक हजार (1000) शब्दों में अपेक्षित है।

(40x1=40 अंक)

26. Role of Religion in multi-religious society.

बहुधर्मी समाज में धर्म की भूमिका

OR / अथवा

Gandhian critique of Modernity.

आधुनिकता की गाँधीवादी समीक्षा

OR / अथवा

Dharma as a <u>Purusārtha</u>.

परुषार्थ के रूप में धर्म

OR / अथवा

Happiness as a goal of life.

जीवन के लक्ष्य के रूप में-सुख

OR / अथवा

Vedāntic view of life and its relevance.

वेदान्त की जीवन दृष्टि एवं उसकी प्रासंगिकता

FOR OFFICE USE ONLY

Marks Obtained

Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....